



२ॐ नमः शिवाय ॥ नाम कर्तुं विधि ॥ मचावूर्ध्वं क क्रिया
 ॥ ॥ कृपी कलसा ॥ सागी ॥ गलस ॥ महाकाल ॥ लमग्रस ॥ वाल
 कमानो ॥ वेस्तीनन ॥ चाकिवो ॥ खन ॥ ॥ मोरुने ॥ नूचा ॥ मचा
 त्रिंशदा ॥ स्वगलद ॥ द्वाय ॥ उलागह ॥ १२ हिम ॥ हान ॥ द्याकि
 वक्रिष्ठा ॥ य ॥ नूजा कि व कू ॥ चिवा ना वास नय ॥ कावि इ नूलाच

अश्वमेध
 AGHARSHI

2654

तया ॥ हामन ॥ आसीतया ॥ उला ॥ सगंया ॥ धनय ॥ उलागह ॥ छह
 ल ॥ कासि ॥ कर्तना ॥ आसागन ॥ दअन ॥ तया ॥ तया ॥ ॥ पूजा
 नाथान ॥ किन ॥ कास ॥ सकल्यया ॥ का ॥ स्वीकिगल ॥ द्वाय ॥ स्वीज
 पयाय ॥ मनु ॥ ॐ सर्व ॥ न ॥ धन ॥ महाया ॥ लमग्र ॥ न ॥ द्वा ॥ धन ॥ १०८
 ॥ स्वहा ॥ सुधा ॥ नग ॥ आकर्षन ॥ धूकन ॥ ॥ धन ॥ लि ॥ ए ॥ न ॥ मनु

लयाया॥ सिद्धतया॥ नाथान किं धर्मादां का॥ मनुविहङ्गन
॥ नावोपिखासाख्मयकच्छाया॥ ॥ दगुलिसमाधियाय॥
धनं लि कलस सजायाय॥ सागी मता सा कि वो. रु कल पूजा
याय॥ ॥ सा कि वो. आ गिनी देव ता रु ला न काय. रु ला न धन
म॥ पंचयचा न रु जा॥ पूषत्या सा॥ अष्टमा ठिका आ गिय स्वाहा

॥ मुनी॥ बुक्राय निमहा द वा. नो डाय निस्वत रा स्वना का
मा नि न क नि ला सा. वैष्णवी य न म मु न॥ वा ना हि धा न न
पि च. ॐ डाय नी गो नी र्हा नि ला त दि मा लि का लि का द
वी. र्वा दि का य न म मु न॥ थू लि वा कि वो रु जा॥ ॥ थनं लि
सागी मला सा ला या ड॥ स्व लि वा या ड॥ स्व ली समा म रु दु का त

यः ॥ दिदिनमचा वृषिकातयः ॥ न किनं मचा वलिनपि
स्यः ॥ तालचा वनकी ॥ जलधना हाय काद्रु हा हया वः ॥ दिदि
नमचा मामय ताल वक्रा यः ॥ दिदिपि हा वानः ॥ ध्वनी लि
मामया मूलमचा तया वः ॥ मामपूजा धियः संकल्पया क
॥ मामगुद्रमगुलमानकः ॥ खानवा कः ॥ वलिविद्यकः

॥ विसर्जनया कः ॥ ध्वनी लि निलाजनया यः ॥ मखजल
हायः ॥ ॐ सर्वकृष्णपक्ष्मनि कृन्तुं रुद्रु स्वाहा ॥ ॥
मिसलिमूर्कापकौपियातयः ॥ ॐ सर्वपापविघ्नमाना
नृत्तमि कृन्तुं रुद्रु स्वाहा ॥ ॥ जालमलीपियः ॥ ॐ सर्ववन
नमलानयनय रुद्रु स्वाहा ॥ ॥ स्त्रीपियातयः ॥ ॐ सर्व

प्रथमं ज्ञानमस्मात्तान् द्यौ कथं श्रुत्वा हा ॥ ॥ मन्ता न
या जाया चोपि यै ॥ ॐ हन २ स हन २ ॐ दियं वली विष्णु
धनिय नून च नै हं रुद्र स्वाहा ॥ ॥ आ नतिगमल ॥ ॐ आदो
कल्यानं मध्व कल्यानं पर्यवत् मन्त्रि कल्यानं स्वर्थं सुव
ज्जने कवलपवि पूर्णं पवि पुङ्ग पयं वदात वक्रचय

संप्रकाशयन्ति स्म ॥ ॥ सप्रयन्ती कथं ॥ ॥ मनुष्याश्च
धूढातय ॥ ॐ कृष्ण कृष्ण मि विष्णु मन्त्रि कृष्ण रुद्र स्वाहा ॥
आसगलसाया ॥ मरु २ पी लोकनाथ जिन वन मरुता
कम्बला वज्र सत्त्व मेष्ठिया वज्र पानि सुक वन हि कनो
नाह्ना रुद्र पाता वृक्षा वेना च नाय मिह वन नमि ते



सकसिगांससमयविय
वजिष्ठकयकाःमस्या
लायकादियः॥२॥॥
यलावियः॥२॥॥
समयवोरनवातयः॥
समानिधकायातया
सकसिकंठमा॥ ॥

वातयवजिनस्त
तयावृष्टपाःचक्र
पागुपदायाःसि
माका॥२॥॥
पाःरुगावातयः॥
सिगतयः॥२॥॥
यववोरनवातयः॥

मवावृष्टकगुवाया
अहालाकिः॥२॥॥
किर्नवकंनवा॥२॥॥
वावृष्टकंनवा॥२॥॥
कृषीदावृष्टकंनवा॥२॥॥
नंदुचादावृष्टकंनवा॥२॥॥
वृष्टकप्रमानथ॥२॥॥

द्विदनिसेखदायाःमुलासर्वथसिद्धिविमलसुमलसुःमंगलं
वाधिसत्वाःपिखात्ताखसतयकच्छाया॥॥॥
वज्रनक्रुद्राःवाहोयिवज्ररुद्रंरुद्रखाहा॥॥॥
गमाचातथेवखावनाःनसर्वसत्वासुखीनांरुवन्दुःमासावि
नायनवदवप्रश्नःवृद्धनमस्यामिः॥॥॥
वृद्धनमस्यामिः॥॥॥

नमस्त्यामि ॐ हनु स्वस्ति ॥ ॥ स्वगनयपास्वदातयागुलि न
पालिकाया दूजासतय ॥ स्वगनत्वाय ॥ स्वस्तिवाक् ॥ स्वस्तिव
इन्द्रमीदृक् ॥ ॥ स्वगनैतिक ॥ मिच्छूल द. ॐ सा मवात्रीपु
किग. खान. द. जिना. ग्वयंतया. लवकाय. मवाताय ॥ ध्वनंलि
वलागहलस. नामवायातयागु. मावायाकपालसतय ॥ वाक्

नमस्कनामस थागत प्रव प्रव ॥ मकु ॥ ॥ ध्वनंलि. पूजा. वृष
वातय. द्राया द. वन ॥ मताषूषाविद्य. मिथाल प्रजा ॥ ॥ स्वगन
तिक ॥ ॥ ग. नावनहि कल. मवातातिक ॥ ॥ थाकालिन. वलंगतह
लस. धलकलितयाव. जानक वाक्याया ॥ नृधस्क पद विनि
धायक. कडा घतस्नानितयूक मस्मी. नृध दयज्जैत इयु

धनया दद्याच्च पीती म्वन काच कादि ॥ ॥ थ कालि न
पाचि न म्रुडु सि क ॥ ॥ ध ल क ह्रि स्व या म वा ना वि र्पं धी क न क
व ॥ ॥ ॐ आ ॥ पूर्व त थ ग र म धू आ स न स्वा ल ॥ ॥ न क घ नि
ना सि क सा पा ॥ ॥ थ ना वि र्पं धी का गु वा ना स त या व ॥ क ला प्र आ या
वा व स म्र य का या व क ला का य ॥ ॥ क ह्रि ल य ॥ ॥ क ल हा य ॥ ॥ थ ना

सिद्धं लयः ॥ ॐ रुद्राग्नित्रयं रुद्रं रुद्रं स्वाहा ॥ ॥ धनं लिखति किव लि
सदा किच्छायः ॥ किण्ठतां कं ॥ यधर्मः ॥ यो किं वीतय क होय क्वा
ससः ॥ लिखनं वः ॥ मोवा कपीया व दौ कि विषय कं लूखा पीनं ॥ वल
गत हल माला घाय काय या ज वलूखा सः ॥ श्वाय या दया लूखा
सतायः ॥ ॥ धनं लिनायान किं धलं दां कं ॥ किं वतानं ॥ मुक्तिया
यः ॥ जभापनः ॥ सताहनः ॥ यधर्मः ॥ विद्या लूकायः ॥ गुन प्रज्ञा ॥

दवदकिना सांगतयका॥ सांगका काय॥ सांगनकिनीदः
 तात्वा॥ सकसिनीतिथि॥ कमापन॥ कलसका काय॥ क
 लुजलहाय सकहिनां॥ सकसितां हाया॥ हादकिना काय
 ॥ स्वाका काय॥ सकसितां स्वासिद्धविया॥ पूजा स्वां पूवी
 थानयक हाये॥ तलथा हावान॥ दववाश्नवातयस
 नाथानकितादकिना विय॥ ३

क्रयनय॥ कायनय॥ दवाश्नवातय॥ हायनय॥
 गुहाश॥ नाथानकिता हाथानय॥ वला काय कवय
 ॥ किनामकर्तु क्रिया स्नायी॥ ॥ स्ना १००३ भाषाट्टु दि१३ गो४
 पूजाश १ मगाकिद्ध २ कसिदीप न्यांसक्रय १ ॥ स्ना १
 कलस १ वादास्वाकवा किलिप ग्वजाग्व १२ पका १
 सगंधो ४ कानिद्र १ मगादल्लय निलाजंश २ ॥ स्ना १

विनम्र भिंयायाभुर
 गगंका १२